International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-06-2026, Accepted: 03-07-2026, Published: 18-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 18-20

आदिवासी लोकगीत और खड़ीबोली लोकगीत का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. झुनुबाला खुण्टिआ
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, किस मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12193

सारांश
आदिवासी लोकगीत अनेक जाति और भाषा में पाए जाते हैं इसलिए उसके अनेक रूप होते हैं यद्यपि उन रुपों में अनेक समता और विसमता देखने को मिलता है;जबकि खड़ीबोली लोकगीत एक ही जाति और एक ही भाषा में होने के कारण उसका रूप एक होता है। आदिवासी और खड़ीबोली लोकगीत दोनों ही साहित्य, वाचिक परंपरा को आधार बनाकर अपने पुरखों से भावी पीढ़ी तक पीढ़ी–दर पीढ़ी हस्तान्तर होती रहती है, जिसमे उनके सामुदायिक जीवन दर्शन देखने को मिलता हैं। दोनों लोकगीतों में प्रकृति केंद्र में है। सामुदायिक चेतना और समतामूलक भाव देखने को मिलता है। खड़ीबोली के संस्कार गीत और आदिवासी के ऋतु गीत में इसका प्रमाण देखने को मिलता है। अपने अस्मिता और अधिकारों के लिए प्रतिरोध और विद्रोह के स्वर के साथ–साथ सांस्कृतिक समीकरण के चलते कथ्य और शैली में भी समता देखने को मिलता है।

मूल शब्दः आदिवासी, खड़ीबोली, लोकगीत, प्रकृति, सामुदायिक, लोकसाहित्य, समतामूलक आनुष्ठानिक, ऋतु दृत्योहार, क्रिया–कलाप, बाल, साहित्यिक तुलनात्मक, अध्ययन, विशेषता

लोकगीत लोकसाहित्य की एक प्रमुख विधा है,जो लोगों के द्वारा अपनी बोली में विशेष परिस्थिति, स्थल, कर्म तथा संस्कारों के अवसर पर गाया जाता है। इसमें मुख्यत लोगों का पारिवारिक, सामाजिक जीवन का चित्रण देखने को मिलता है। इसमें भावाव्यक्ति के साथ–साथ सामूहिक चेतना का भी यथार्थ चित्रण मिलता है। लोकगीत का कोई विशेष गीतकार नहीं होता। जब तक उसको कोई लिपिबद्ध नहीं करता तब तक वह परिवर्तित होता रहता है। लोकगीतों का सठीक रचनाकाल पता नहीं चलता। लोकगीतों को मुख्यतः (१) आनुष्ठानिक लोकगीत (२) विभिन्न ऋतु–त्योहारों से सम्बंधित लोकगीत (३) रोजमर्रा के विभिन्न क्रिया–कलापों से सम्बंधित लोकगीत (४) बाल लोकगीत आदि चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। क्षेत्र विशेष के आधार पर लोकगीतों को आदिवासी लोकगीत और खड़ीबोली लोकगीत आदि वर्ग में भी विभाजित किया जा सकता है। आदिवासी लोकगीत और खड़ीबोली लोकगीत भारतीय साहित्य के दो प्रमुख साहित्यिक धरोहर है। इनकी साहित्यिक परम्पराएं ग्रामीण भारत के उन समृद्ध एवं महत्वपूर्ण वाचिक परम्पराओं का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसमें यथार्थ ग्रामीण जनजीवन मुखरित होता है। आदिवासी लोकगीत और खड़ीबोली लोक गीतों के तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत दोनों लोकगीतों की विशेषता, अंतर और समानता आदि विन्दुओं पर विचार किया जायेगा जिससे पाठक, विद्यार्थी और शोधार्थी समृद्ध भारतीय लोकसाहित्य का मात्र परिचय ही प्राप्त नहीं करेंगे परन्तु उसका मूल्यांकन करने में भी सक्षम हो पाएंगे ।

आदिवासी लोकगीत

आदिवासी लोकगीत वह गीत है जो आदिवासी जन समुदायों द्वारा गाया जाता है। यह लोकगीत मुख्यतः उनके जीवनशैली और प्रकृति पर आधारित होता है। यह वाचिक होता है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होता है। आदिवासी समाज व्यक्ति केंद्रित नहीं होता बल्कि समुदाय केंद्रित होता है। आदिवासी समाज की जो मूल विशेषता होती हैं, जैसे; सामूहिक प्रयास ,सहयोग और प्रकृति के साथ साहचर्य उनके लोक गीत में भी देखने को मिलता है। आदिवासी लोकगीतों में प्रकृति प्रेम, कृषि, चिकित्या, उनकी पारम्परिक जीवन शैली, संघर्ष की कहानी आदि देखने को मिलता है। इसमें प्रकृति के साथ उनकी सामीप्यता और निर्भीकता तथा पारंपरिक आस्था और विश्वास भी प्रकट होता है। यह अनेक आदिवासी भाषा और बोलियों में देखने को मिलता है। इसमें भाषायी विविधता होने के वावजूद यह स्थानीय संस्कृति को प्रतिविम्बित करता है तथा पारम्परिक ज्ञान और कौशल का संरक्षण भी करता है। छोटनागपुर के आदिवासी को नाचगान विरासत में मिला है। मौसम के अनुरूप जैसे खेतीबाड़ी करते हैं वैसे मौसमी राग में आदिवासी गाना गाते है। आदिवासियों में अनेक तरह के लोकगीत देखने को मिलता है जैसे ;(१) भाषा के आधार पर (२) अनुष्ठानों के आधार पर (३) ऋतु–त्योहारों के आधार पर (४) रोजमर्रा के विभिन्न क्रिया–कलापों के आधार पर ; जिस पर आगे संक्षेप में विचार किया जा रहा है।

1. भाषा के आधार पर प्रमुख आदिवासी लोकगीतः

भाषा के आधार पर आदिवासियों में अनेक तरह के लोकगीत देखने को मिलता है, जैसे; खड़िया लोकगीत, मुंडारी लोकगीत और कुडुख लोकगीत।

2. खड़िया लोकगीत

खड़िया आदिवासी समुदाय में खड़िया लोक गीत देखने को मिलता है। वर्षा के आगमन पर नदी में बाढ का आना, मछिलयों के खेतो पर उछलना और वर्षा ऋतु के वाद जब सूखा पड जाता है, बगुले का उन मछलियों के खाने से जो पीड़ा खड़िया लोगों को होता है, उसको खड़िया लोग कुछ इस तरह से व्यक्त करते है ; "अंकलः डा ,अजोङ बोंग की गुदनु काडोङ की । बकलाई लकोब – लकोब ओलते की रे गुदनु काडोंग की।।"[1]

3. मुंडारी लोकगीत

मुंडारी लोकगीत मुंडा आदिवासी समुदाय में देखने को मिलता है। जब मुंडा लोग लड़की की सुंदरता की प्रसंशा करते हुए, उसकी तुलना कपास फूल और कमल फूल से करते हुए, उसे पूछते है; उसकी शादी कहाँ करें ? तब गाते है: "दुलमबा लदालुद, अमना मंइं लदालुदु। अटल बा कोरे बोरे अमना मंइं केरे बोरे। अमना मंइं लदालुदु, ओकोरेबु सेने दुतमअ। अमना मंइं केरे बोरे। चिमय रेबु दरडाय ? [2]

4. कुडुख लोकगीत

कुडुख लोकगीत की अत्यंत समृद्ध परंपरा देखने को मिलता है। इस लोकगीतों के अंतर्गत ऋतुगीत, संस्कार गीत,धार्मिक गीत, श्रम गीत, खेल गीत, उपदेशात्मक गीत आदि आते हैं। कुडुख लोकगीतों में प्रकृति का वर्णन, मानव सभ्यता का वर्णन, जीवन दर्शन का वर्णन सरल और सहज तरीके से हुआ है, जैसे; "आतेय दिना रहाले मईया गे, सखुआ पत्तय लेखे गुधि–गुधि रहाले, आबे तो होले मइया गे जितिया पत्तय लेखे भेले छितितान"[3]

5. अनुष्ठानों के आधार प्रमुख आदिवासी लोकगीत

आदिवासी लोकगीतों में अनुष्ठानों के आधार पर अनेक तरह के लोकगीत देखने को मिलता है (झुमर, बैंजा (शादी –ब्याह) लोकगीत और जतरा लोकगीत उसका उदाहरण प्रस्तुत करता है।

झुमर लोकगीत

झुमर लोकगीत विवाह, प्रेम के अवसर पर झारखण्ड, बिहार, ओडिशा के उराँव जनसमुदायों द्वारा गाया जाता है। झुमर लोकगीत का एक सुन्दर उदाहरण आगे प्रस्तुत किया गया है, "गुड़गुड़िया चुम्बा पानी आने गेले गे, डाहर भुलाले, आइर–आइर आले गे डाहर भुलाले। केंहुना उपरे गगारी, छैला बटे नजर चलाय गे डाहर भुलाले।"[4]

बैंजा (शादी –ब्याह) लोकगीत

आदिवासी जनजाति के शादी –व्याह में गीत गाया जाता है, उसको बैंजा लोकगीत कहते हैं। उराँव जनजाति के शादी –व्याह में नागपुरी में गीत गाया जाता है, जैसे; "मुनगा रोपाले बाबा मुनगा भरी आँगन शोभाय, मुनगा फुली –फारी, गेला, भौंरो रसा चूसे आवाय "[5]

जतरा लोकगीत

जतरा लोकगीत जेठ (जेष्ठ) महीना में जतरा महोत्सव अनुष्ठित होने के अवसर पर उराँव जनजाति के युवक और युवतियों द्वारा गाया जाता है। नाच–गाने की तैयारियों के साथ जतरा की तैयारियां आठ–नो महीने पहले ही शुरू हो जाती हैं। यद्यपि आदिवासी लड़के रोजी रोटी के लिए कोलकाता, भूटान, आसाम आदि कहीं भी जाते हैं पर जतरा में नाचने गाने के लिए घर वापस आ जाते हैं, क्योकि लड़कियां अपने साथी लड़के के लिए गीत गाकर उनको आने के लिए मजबूर करते हैं जैसे; "निन जोड़ी कोड़ा कादैय, जतारा बरो होले, ने गुसन, भेजा बेचोन, नन तारा जिया, निंगैहन अम्बाके नाना "[6]

ऋतु – त्योहारों के आधार पर प्रमुख आदिवासी लोकगीत

ऋतु–त्योहारों के आधार आदिवासियों के प्रमुख लोकगीतों में करमा, सरहुल आदि लोकगीत प्रधान है। जिस पर आगे सोदाहरण विचार किया जा रहा है।

करमा लोकगीत

करमा लोकगीत मध्य प्रदेश, छतीशगढ, ओडिशा, आँध्रप्रदेश के गौंड, बैगा, भुमिया, उराउँ, कोल, किसान आदि जनजाति द्वारा करमा त्यौहार मनाते समय गाया जाता है। यह १६० प्रकार के होते हैं और भाषा भिन्न प्रदेशों के अनुसार बदलता रहता है। आगे एक करमा गीत 'अइले करम के दीन' का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है; जिसमें कर्मपूजा के दिन बैगा और बैगिन किस तरह करम पूजा करते उसके बारे में वर्णन किया गया है, जैसे; "भादौं के रतिया हो निति अनहियरिया हो अइले करम के दिन। आगे आगे जाला बइगा हो बइगिन, पीछे जवब अइया सब लोग। एक कोसा जाले, दूसरे कोसा जाले, कतहूं न करमा पवदेश "[7]

सरहुल लोकगीत

सरहुल त्यौहार मनाने हुए झाड़खंड, बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल के चाय बगानों के उराँव, हो, मुंडा, खड़िया, सदान आदिवासी वसंत ऋतु के आगमन के अवसर पर धरतीमाता और शाल वृक्ष की पूजा करते समय जो गीत गाते है उसको सरहुल लोकगीत कहते हैं। प्रकृति (धरती, सूर्य) के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए भारत के अनेक जनजाति यह लोकगीत गाते है। उराँव जनजाति का सरहुल मुख्य त्यौहार होता है, इसलिए इस जनजाति के लोग सरहुल लोकगीत को ज्यादातर गाते हैं। नागपुरी में सरहुल गीत कुछ इस तरह से गाते है" के भईया होरी खेलय सरागे धूलि उडाल जाय, बबु भईया होरी खेलैं सरागे धोली उडाल जाय,"[8]

रोजमर्रा के विभिन्न क्रिया–कलापों के आधार पर

रोजमर्रा के विभिन्न क्रिया–कलापों के आधार पर आदिवासियों के प्रमुख लोकगीतों में फग्गू, आसारी,धुडिया,रोपा लोकगीत आदि प्रधान है। इसमें धुडिया,रोपा लोकगीतों पर सोदाहरण विचार किया जा रहा है।

धुडिया लोकगीत

धुडिया, लोकगीत कृषिकार्य से संबधित होता है। उराउं जनजाति के लोग सरहुल पर्व के बाद मंदर के साथ धुडिया नाच गान करते हैं। वर्षा हो या न हो पर सरहुल त्यौहार के बाद बीज बोने का काम शुरू करते हैं, इस क्रिया को धड़ियाना कहते है। इसी समय जो गाया जाता हैं, उसे धुडिया लोकगीत कहते हैं। इस लोकगीत का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है। "ई चंदो एंदेर चदों कोय, कुला लेखे आरेगा लगी रे, ई चंदो फग्गू चदों कोय, कुला लेखे आरेगा लगी।"[9]

रोपा लोकगीत:

उरांव जनजाति के लोग वर्षा ऋतु के आगमन पर रोपाई का काम शुरू करते है। जल्दी से जल्दी रोपाई के काम समाप्त करने के लिए गाँव भर की स्त्रियों को भी बुलाया जाता है। रोपते समय बोरियत को दूर कर काम में मन लगाने के लिए जिस राग में स्त्रियाँ गाती है, उसको रोपा राग कहते हैं। यह राग सावन और भादों में गाया जाता है,उदाहरण स्वरूप एक रोपा राग प्रस्तुत किया गया है:

"कोंको लोको पेलो रोवा इदआ केरा
बकुली लेखे लोयो – कोय मनी
पैरी बरी पेलो रोवा इदआ केरा
बकुली लेखे लोयो – कोय मनी " [10]

(सुन्दर युवती रोपा रोपने गयी, बगुला के समान झुकी–सी लगती है, सुबह युवती रोपा रोपने गयी बगुला के समान झुकी–सी लगती है।)

खड़ीबोली लोकगीत

खड़ीबोली (कौरवी) लोक साहित्य भारत के मैदानी इलाके (दिल्ली, मेरठ, बरेली के आसपास) की संस्कृति और जीवनशैली का प्रतिविम्ब होता है। यह साहित्य इन्ही मैदानी इलाके के संस्कृति, जीवनशैली और लोकविष्वासों को अभिव्यक्त करता है। यह अवधी या ब्रजभाषा के प्रभाव से मुक्त ठेठ खड़ीबोली (कौरवी) में देखने को मिलता है। यह लोकगीत आदिवासियों के सामाजिक और पारिवारिक अनुष्ठानों से सम्बंधित होता है। उन्नीसवीं शताब्दी के बाद इसके साहित्यिक विकास देखने को मिला है। खड़ीबोली लोकगीतों को चार भागों में विभाजित किया जाता है, जैसे; (1) आनुष्ठानिक लोकगीत (व्रत, त्यौहार, अनुष्ठान

सम्बन्धी,देवी–देवताओं के सम्बन्धी) (2) ऋतु लोकगीत (3) श्रम लोकगीत (4) बाल लोकगीत

आनुष्ठानिक लोकगीत (व्रत, त्यौहार, पूजा, अनुष्ठान सम्बन्धी, देवी–देवताओं के सम्बन्धी)

लोकगीतों में आनुष्ठानिक लोकगीत ज्यादातर देखने को मिलता है। विभिन्न अनुष्ठान में जो गीत गाये जाते हैं, वह अनुष्ठानिक लोकगीत कहे जाते हैं ,जैसे; विवाह, ब्रत, पूजा, जन्म और मृत्यु आदि। खड़ीबोली में आनुष्ठानिक लोकगीत (पूजा) का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है –

"उठ मिल लो राम भरत आये
भूरी सी हथिनी पै जरद अम्बरी ऊपर चदंर डुलत आये
राह रघुवर, अंगन लिपाया
मोतियन चौक पुरत आये
बहियां पसार मिलै चारों भइया
नैनों से नीर ढलत आये।"[11]

ऋतु लोकगीत

भारत में चार ऋतु प्रधान रूप से देखने को मिलते हैं जैसे; शिशिर, वर्षा, ग्रीष्म और वसंत ऋतु अनेक तरह के ऋतु लोकगीत देखने को मिलता है। ऋतु गीतों में सर्वाधिक प्रचलन है; सावन गीत, बारहमासा तथा होली गीत। सावन के गीतों में विरह का वर्णन, हरियाली तीज का विशेष रूप से वर्णन देखने को मिलते है। उत्तरप्रदेश में कजली गाने की प्रथा है। कजली में श्रृंगार रस के उभय पक्षों का दर्शन मिलता है। भादों में कृष्ण जन्माष्टमी अवसर पर भक्ति रस के गीत गाए जाते हैं। कवार लड़कों के द्वारा टेसू के गीत गाए जाते हैं। होली के गीतों में उल्लास की व्यंजना देखने को मिलते हैं। वर्षा ऋतु में बारहमासा गाया जाता है। इसमें वियोगजन्य दुखों का वर्णन देखने को मिलता है। आगे सावन गीत का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है;

"सावन सूना भैया बिन हो गया जी
किस्कू बनाऊँ लपझप पूरियाँ जी
किस्कू राघू रस खीर सावन"[12]

श्रम लोकगीत

रोज़मर्रा के काम करते हुए स्त्री और पुरूष अपने मन–शरीर के पीड़ा को कम करने के लिए जो गीत गाते हैं, उसको श्रम गीत कहते हैं। इस गीत से मन में स्फूर्ति का संचार तो होता है साथ में उनके मन में छुपे वेदना और आकांक्षाओं के वारे में भी पता चलता है। श्रम गीतों को स्त्री वर्ग और पुरुष वर्ग आदि दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। स्त्री वर्ग के श्रम गीत मुख्य रूप से स्त्रियों के क्रिया–कलापों उनकी समस्याओं और मनोदशा से जुड़ी हुई होती है। स्त्री अपने अन्तर्मन की पीड़ा को व्यक्त करते हुए गाती है;

"ना इस घर में चक्की री ना चूल्हा,
ना चक्की में वैहण मेरी
बुरा है ससुर का देस
ना इस घर में कोठी रे कुठला
ना कोठी में धान" [13]

पुरुष वर्ग के श्रम गीतों में करुणा रस और श्रृंगार रस मिलते हैं। धर्म और नीति के उपदेश से लेकर हास्य कटाक्ष, उपालंभ भी देखने को मिलता है। धर्म से जुड़ा हुआ एक पुरुष वर्ग का श्रम गीत का उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया गया है;

"माला मन से लड पडी, प्यारे का लडकावे मोय
मण निहचें कर राखिये राम मिला दयूंगी तोय"[14]

बाल लोकगीत

बाल लोकगीतों में बच्चों के खेल सम्बन्धी गीत ही प्रमुख रूप से देखने को मिलता है। इन गीतों में जीवन के गंभीर पक्षों को हास्यात्मक और विनोदात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। गांव– देहात के बच्चों (बालक और बालिका) के द्वारा जो खेल खेला जाता है जैसे: अंधे की लकड़ी, लीली घोड़ी, गुडा–गुड़ियों का खेल आदि। इन सभी खेल में जो गीत प्रयोग होता है उसे बाल गीत कहा जाता है। बाल गीतों में छोटे–छोटे बच्चों की जानकारी बढ़ाने के लिए अनेक गीत हमे देखने को मिलेगा जिसको खेल–खेल में गाते हुए वे कुछ शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। आगे जानवरों पर एक बालगीत उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है रहा है;

"बीबी मेंढकी री तू तो पानी में की रानी
कौआ तेरा भाई भतीजा चील तेरी देवरानी
बगुला तेरा छोटा देवर तू कहाँ की रानी"[15]

अतः दोनों लोकगीतों की तुलना से यह निष्कर्ष निकलता है कि आदिवासी लोकगीत की परंपरा वाचिक है परन्तु खड़ीबोली लोकगीत की परंपरा, वाचिक और लिखित दोनों है। आदिवासी लोकगीत प्रकृति और समुदाय से जुड़ा हुआ होता है पर खड़ीबोली लोकगीत सामाजिक, पारिवारिक और संस्कृतिक जीवन से जुड़ा है। आदिवासी लोकगीत मुख्य रूप से झाड़खंड–ओडिशा, पूर्वोत्तर भारत के वन–पहाड़ी प्रदेशों में देखने को मिलता है परन्तु खड़ीबोली लोकगीत दिल्ली, मेरठ, बरेली के आसपास के क्षेत्र (गांव और शहर) में देखने को मिलता है। आदिवासी लोकगीत अकृत्रिम और सहज होता है पर खड़ीबोली लोक गीत लोकानुभवों पर आधारित होता है। आदिवासी लोकगीत अनेक आदिवासी भाषा और बोली में देखने को मिलता है परन्तु खड़ीबोली लोकगीत हिंदी भाषा और उसकी बोली (खड़ीबोली) में मिलता है।

संदर्भ

1. खड़िया, मुंडा और उरावँ संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ जोवाकिम डुंग डुंग ये. स.झारखण्ड खरोखा, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ–316
2. वही, पृष्ठ–316
3. पुरुखा डंडी (कुडुख लोकगीत संग्रह), डॉ रामकिशोर भगत, संजु लकड़ा, वीर पानी प्रकाशन, प्रथम प्रकाशन –2024, पृष्ठ –10
4. उराँव–सरना धर्म और संस्कृति, झारखण्ड झरोखा, भीखू तिरकी, प्रथम संस्करण 2011 ,पृष्ठ– 295
5. वही, पृष्ठ–301
6. वही, पृष्ठ– 218
7. कर्मा आदिवासी लोकगीतों का संग्रह, डॉ अर्जुन दास केसरी, लोक रूचि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, अनंत चतुर्दशी 81, पृ–17
8. उराँव–सरना धर्म और संस्कृति, झारखण्ड झरोखा, भीखू तिरकी, प्रथम संस्करण 2011, पृ–319
9. खड़िया, मुंडा और उरावँ संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ जोवाकिम डुंग डुंग ये. स, झारखण्ड खरोखा, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ–344
10. वही,पृष्ठ– 345
11. खड़ीबोली का लोकसाहित्य, डॉ सत्या गुप्त, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहबाद, प्रथम संस्करण 1965, पृष्ठ–67
12. वही, पृष्ठ–70
13. वही, पृष्ठ–90
14. वही, पृष्ठ–94
15. वही पृष्ठ–101